पाठ – रहीम के दोहे

शब्दार्थ –

1. संपति	-	धन
2. सगे	-	संगे – संबंधी
3. बनत	-	बनना
4. रीत	-	प्रकार
5. विपत्ति	-	संकट
6. कसौटी	-	परखने का पत्थर
7. जे	-	जो
8. कसे	-	घिसने पर
9. तेई	-	वही
10.साँचे	-	सच्चे
11.मीत	-	मित्र
12.परे	-	पड़ने पर
13.जात बहि	-	बाहर निकलना
14.तजि	-	त्यागना
15.मीनन	-	मछलियाँ
16.नीर	-	पानी
17.तऊ	-	तब भी
18.छाँड़ति	-	छोड़ती है
19.छोह	-	मोह
20.तरुवर	-	पेड़
21.नहिं	-	नहीं
22.सरवर	-	तालाब
23.पियत	-	पीना
24.पान	-	पानी
25.परकाज	-	दूसरों के कार्य
26.सचहिं	-	संचय करना
27.सुजान	-	सज्जन व्यक्ति
28.थोथे	-	जलरहित
29.बादर	-	बादल

egyanarchive

30.घहरात - गड़गड़ाना
31.भए - होना
32.रीत - व्यवहार
33.सीत - ठंड
34.मेह - बारिश
35.जैसी परे - जैसी परिस्थिति
36.सो - वह
37.सहि - सहना
38.देह - शरीर

व्याख्या –

1- **कहि रहीम संपति सगे, बनत बहुत बहु रीत।**
बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ "रहीम के दोहे" से ली गई है। इस दोहे के कवि "रहीम" हैं।

प्रसंग – इस दोहे में रहीम ने सच्चे मित्र के बारे में बताया है।

अर्थ – रहीम कहते हैं कि जब हमारे पास धन-संपत्ति होती है तो हमारे बहुत से मित्र और संबंधी बन जाते हैं परन्तु जो व्यक्ति संकट के समय सहायता करता है वही सच्चा मित्र होता है।

2- **जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।**
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ "रहीम के दोहे" से ली गई है। इस दोहे के कवि "रहीम" हैं।

प्रसंग – इस दोहे में रहीम ने मोह और उससे होने वाले नुकसान के बारे में बताया है ।

अर्थ – इस दोहे में कवि ने जल के प्रति मछली के गहरे प्रेम के बारे में बताया है। मछली जल से प्रेम करती है पर जल मछली से प्रेम नहीं करता। रहीम कहते हैं कि जब मछली पकड़ने के लिए जाल को जल में डाला जाता है तो मछलियों के प्रति मोह को छोड़कर जल शीघ्र ही जाल से बह जाता है लेकिन मछलियाँ जल के प्रति अपने प्रेम को नहीं खत्म कर पातीं। वे जल से अलग होते ही तड़प-तड़प कर मर जाती हैं।

3- **तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।**
कहि रहीम परकाज हित, संपति-संचहि सुजान।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ "रहीम के दोहे" से ली गई है। इस दोहे के कवि "रहीम" हैं।

प्रसंग – इस दोहे में रहीम ने परोपकार के बारे में बताया है ।

अर्थ – वे कहते हैं कि जिस प्रकार वृक्ष स्वयं फल नहीं खाते हैं, सरोवर स्वयं पानी नहीं पीते ठीक उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति धन का संचय खुद के लिए न करके परोपकार के लिए करते हैं।

4- **थोथे बादर क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।**
धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ "रहीम के दोहे" से ली गई है। इस दोहे के कवि "रहीम" हैं।

प्रसंग – इस दोहे में रहीम ने पहले जो व्यक्ति धनी थे और अब निर्धन हो चुके हैं उनके बारे में बताया है ।

अर्थ – इस दोहे में कवि ने क्वार मास के बादलों का वर्णन किया है। रहीम कहते हैं कि क्वार मास में आकाश में बिना पानी के खाली बादल केवल गरजते हैं बरसते नहीं ठीक उसी प्रकार धनी पुरुष गरीब हो जाने पर भी अपने सुख के दिनों की बातें याद करके घमंड भरी बातें बोलते रहते हैं।

5- **धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।**
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।

सन्दर्भ – प्रस्तुत दोहा हमारी पाठ्य पुस्तक वसंत भाग 2 के पाठ "रहीम के दोहे" से ली गई है। इस दोहे के कवि "रहीम" हैं।

प्रसंग – इस दोहे में रहीम ने विभिन्न परिस्थितियों में समान रूप से रहने के बारे में बताया है ।

अर्थ – रहीम कहते हैं कि शरीर की झेलने की रीति धरती के समान होनी चाहिए। जिस प्रकार धरती सर्दी, गर्मी और वर्षा की विपरीत स्थितियों को सहन कर लेती है उसी प्रकार मनुष्य का शरीर भी ऐसा होना चाहिए जो जीवन में आने वाले सुख-दुःख की जैसी भी परिस्थितियाँ हों, उन्हें सहन कर ले।

प्रश्न-अभ्यास

दोहे से

प्रश्न 1. पाठ में दिए गए दोहों की कोई पंक्ति कथन है और कोई कथन को प्रमाणित करनेवाला उदाहरण। इन दोनों प्रकार की पंक्तियों को पहचान कर अलग-अलग लिखिए। .

उत्तर -

दोहों में वर्णित निम्न पंक्ति कथन हैं-

egyanarchive

1. कहि रहीम संपति सगे, बनते बहुत बहु रीत।
   बिपति कसौटी जे कसे, तेई साँचे मीत।।1।।

कठिन समय में जो मित्र हमारी सहायता करता है, वही हमारा सच्चा मित्र होता है।

2. जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन को मोह।।
   रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छाँड़ति छोह।। 2।।

मछली जल से अपार प्रेम करती है इसीलिए उससे बिछुड़ते ही अपने प्राण त्याग देती है। निम्न पंक्तियों में कथन को

प्रमाणित करने के उदाहरण हैं-

1. तरुवर फल नहिं खात है, सरवर पियत न पान।
   कहि रहीम परकाज हित, संपति-सचहिं सुजान।।3।।

निस्वार्थ भावना से दूसरों का हित करना चाहिए, जैसे-पेड़ अपने फल नहीं खाते, सरोवर अपना जल नहीं पीते और सज्जन धन संचय अपने लिए नहीं करते।

2. थोथे बाद क्वार के, ज्यों रहीम घहरात।
   धनी पुरुष निर्धन भए, करें पाछिली बात।।4।।

कई लोग गरीब होने पर भी दिखावे हेतु अपनी अमीरी की बातें करते रहते हैं, जैसे-आश्विन के महीने में बादल केवल गहराते हैं बरसते नहीं।

3. धरती की-सी रीत है, सीत घाम औ मेह।
जैसी परे सो सहि रहे, त्यों रहीम यह देह।।5।।

मनुष्य को सुख-दुख समान रूप से सहने की शक्ति रखनी चाहिए, जैसे-धरती सरदी, गरमी व बरसात सभी मौसम समान रूप से सहती है।

egyanarchive

प्रश्न 2. रहीम ने क्वार के मास में गरजने वाले बादलों की तुलना ऐसे निर्धन व्यक्तियों से क्यों की है जो पहले कभी धनी थे और बीती बातों को बताकर दूसरों को प्रभावित करना चाहते हैं? दोहे के आधार पर आप सावन के बरसने और गरजनेवाले बादलों के विषय में क्या कहना चाहेंगे?

उत्तर- रहीम ने आश्विन (क्वार) के महीने में आसमान में छाने वाले बादलों की तुलना निर्धन हो गए धनी व्यक्तियों से इसलिए की है, क्योंकि दोनों गरजकर रह जाते हैं, कुछ कर नहीं पाते। पुरानी बातों से निर्धन व्यक्ति का धन लौटकर नहीं आता। जो अपने बीते हुए सुखी दिनों की बात करते रहते हैं, उनकी बातें बेकार और वर्तमान परिस्थितियों में बेकार होती हैं। दोहे के आधार पर सावन के बरसने वाले बादल धनी तथा क्वार के गरजने वाले बादल निर्धन कहे जा सकते हैं।

दोहों के आगे

प्रश्न 1. नीचे दिए गए दोहों में बताई गई सच्चाइयों को यदि हम अपने जीवन में उतार लें तो उसके क्या लाभ होंगे? सोचिए और लिखिए

(क) तरुवर फल ……..

……………. संचहिं सुजान।

(ख) धरती की-सी ………….

……. यह देह॥

उत्तर-

(क) इस दोहे के माध्यम से रहीम यह बताने का प्रयास कर रहे हैं कि वृक्ष आदि की तरह वह अपनी चीजों का संचय नहीं करते और उसी प्रकार सज्जन अपना संचित धन अपने लाभ के लिए उपयोग नहीं करते। उनका धन दूसरों की भलाई में खर्च होता है। यदि हम इस सच्चाई को अपने जीवन में उतार लें, तो अवश्य ही समाज का कल्याणकारी रूप हमारे सामने आएगा और राष्ट्र सुंदर रूप से विकसित होगा।

(ख) इस दोहे के माध्यम से रहीम बताने का प्रयास कर रहे हैं कि मनुष्य को धरती की भाँति सहनशील होना चाहिए। यदि हम सत्य को अपनाएँ तो हम जीवन में आने वाले सुख-दुख को सहज रूप से स्वीकार कर सकेंगे। अपने मार्ग से कभी विचलित नहीं होंगे। हम हर स्थिति में संतुष्ट रहेंगे। हमारे मन में संतोष की भावना आएगी।

भाषा की बात

प्रश्न 1. निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित हिंदी रूप लिखिए-

जैसे-परे-पड़े (रे, डे)

बिपति बादर

मछरी सीत

उत्तर-

रहीम की भाषा		**हिंदी के शब्द**
बिपति	–	विपत्ति
मछरी	–	मछली
बादर	–	बादल
सीत	–	शीत

प्रश्न 2. नीचे दिए उदाहरण पढ़िए

(क) बनत बहुत बहु रीत॥

egyanarchive

(ख) जाल परे जल जात बहि।

उपर्युक्त उदाहरणों की पहली पंक्ति में 'ब' का प्रयोग कई बार किया गया है और दूसरी में 'ज' का प्रयोग, इस प्रकार बार-बार एक ध्वनि के आने से भाषा की सुंदरता बढ़ जाती है। वाक्य रचना की इस विशेषता के अन्य उदाहरण खोजकर लिखिए।

<u>उत्तर</u>-

(क) दाबे व दबे

(ख) संपति-सचहिं सुजान।।

(ग) चारू चंद्र की चंचल किरणें ('च' वर्ण की आवृत्ति)

(घ) तर तमाल तरुवर बहु छाए। ('त' वर्ण की आवृत्ति)

(ङ) रघुपति राघव राजा राम ('र' वर्ण की आवृत्ति)

egyanarchive